

# डॉ. गैरी येट्स, पुस्तक 12, सत्र 14, इस्राएल की आध्यात्मिक बेवफाई, होशे 4-14, भाग 2

© 2024 गैरी येट्स और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. गैरी येट्स की 12वीं पुस्तक पर उनकी व्याख्यान श्रृंखला है। यह व्याख्यान 14 है, इज़राइल की आध्यात्मिक बेवफाई, होशे 4-14, भाग 2।

होशे की पुस्तक के हमारे अध्ययन ने हमें पुस्तक के लेआउट और संदेश को समझने में मदद की है। संदेश का लेआउट और पुस्तक का लेआउट यह है कि अध्याय 1 से 3 में, हम एक कहानी पर ध्यान केंद्रित करते हैं, होशे और गोमेर के बीच प्रेम संबंध की कहानी और जिस तरह से यह इज़राइल के धर्मत्याग और उसके वाचा साथी के रूप में यहोवा के प्रति विश्वासघात को दर्शाता है।

ईश्वर और इस्राएल के बीच का रिश्ता विवाह जैसा है। ईश्वर भविष्यवक्ता को यह चौंकाने वाला काम करने की आज्ञा देता है, जहाँ वह एक भ्रष्ट महिला से विवाह करता है, ताकि इस्राएल को उनके खिलाफ उनके दलबदल की गंभीरता और असीरियन संकट के बारे में बताया जा सके, ताकि उन्हें उस कठोर न्याय के बारे में चेतावनी दी जा सके जो इसके परिणामस्वरूप आने वाला है। पुस्तक के बाकी अध्याय, अध्याय 4 से 14, विवरण प्रदान करते हैं, सटीक रूप से और सटीक रूप से कि कैसे इस्राएल प्रभु के प्रति विश्वासघाती रहा है और वे किस तरह से एक विश्वासघाती साथी रहे हैं।

यह वाचा के मुकदमों की एक श्रृंखला के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जहाँ इस्राएल के विरुद्ध व्यभिचार का औपचारिक आरोप लगाया गया है। भविष्यवक्ता, बहुत स्पष्ट तरीके से, लोगों को यह दिखाने जा रहा है कि ये वे तरीके हैं जिनसे आपने प्रभु के प्रति विश्वासघात किया है। इन सबके बीच आशा यह है कि पश्चाताप और प्रतिक्रिया हो सकती है, लेकिन हमने एक बार-बार यह विषय देखा है कि इस्राएल वापस नहीं आया।

वे वापस नहीं लौट सकते थे। उनके अंदर वेश्यावृत्ति की भावना थी। परमेश्वर की ओर लौटने और न्याय करने तथा आज्ञाओं का पालन करने के बजाय, वे जिस तरह से परमेश्वर की ओर लौटे, वह केवल उन बुतपरस्त अनुष्ठानों को बढ़ाकर था जो वे कर रहे थे।

वे अपने बिस्तर पर लेटे हुए उसके सामने रो रहे थे, और खुद को काट रहे थे। इस्राएल का यह अभियोग पूरी किताब में खुद ही काम करता है। याद रखें कि इन तीनों चक्रों में से प्रत्येक के अंत में, बहाली का वादा भी है।

इस पुस्तक को एक साथ जोड़ने के लिए हम जो कर रहे हैं, वह उन चार या पाँच विशिष्ट तरीकों को देखना है, जिनसे इस्राएल ने परमेश्वर के प्रति विश्वासघात और विश्वासघात किया है। आध्यात्मिक व्यभिचार के ये आरोप कैसे हैं, उनकी पुष्टि कैसे हो रही है? इस्राएल ने वास्तव में ऐसा क्या किया है, जो उनके खिलाफ लगाए गए आरोपों की गंभीरता की ओर ले जाता है? नंबर

एक, उन्होंने हेसेड का अभ्यास नहीं किया है। उन्होंने प्रभु के हेसेड के जवाब में वाचा की वफ़ादारी का अभ्यास नहीं किया है।

इसे थोड़ा और स्पष्ट करने के लिए, उन्होंने परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन नहीं किया है। उन्होंने सामाजिक पाप और धार्मिक पाप दोनों किए हैं। तीसरे आरोप पर विचार करते समय मैं अब विशेष रूप से उन धार्मिक आरोपों पर ध्यान केंद्रित करना चाहता हूँ जो इस्राएल के लोगों के खिलाफ़ लगाए गए हैं।

आमोस, एक छोटे भविष्यवक्ता के रूप में, सामाजिक पापों पर बहुत अधिक ध्यान केंद्रित करता है। होशे ने इसे शामिल किया है, लेकिन होशे धार्मिक पापों पर ध्यान केंद्रित करने जा रहा है। इसलिए, तीसरा आरोप जो इस्राएल के खिलाफ़ लगाया जा रहा है, तीसरा कारण कि वे एक बेवफ़ा पत्नी हैं, यह है कि उन्होंने अन्य देवताओं की पूजा की है और वे मूर्तिपूजा करते हैं।

यही कारण है कि मुझे लगता है कि विवाह का रूपक विशेष रूप से होशे की पुस्तक में उपयुक्त है क्योंकि इस्राएल मूर्तियों की पूजा में शामिल था, कनानी देवता बाल के प्रति उनकी भक्ति, महिला प्रजनन देवी की पूजा और कई मूर्तिपूजक अनुष्ठानों में भी शामिल थी जो ईश्वर के लिए घृणित थे। ईश्वर ने इस्राएल के लोगों से कहा था कि जैसे ही वे देश में आए, उन्हें प्रभु ईश्वर की पूजा करनी थी। उन्हें केवल उसकी पूजा करनी थी।

उन्हें अन्य देवताओं की पूजा नहीं करनी थी। जो कोई भी व्यक्ति अन्य देवताओं की पूजा करता था, उसे मौत की सज़ा दी जानी थी, व्यवस्थाविवरण 13। अगर प्राचीन इस्राएल में कोई ऐसा शहर था जो बाल की पूजा को बढ़ावा देता था, तो उस शहर को मिटा दिया जाना था और नष्ट कर दिया जाना था।

अगर कोई भविष्यवक्ता लोगों को दूसरे देवताओं और बाल देवताओं का अनुसरण करने के लिए प्रोत्साहित करता था, तो उसे मौत की सज़ा दी जानी चाहिए थी। यह एक गंभीर मुद्दा था। बहुत से लोगों को पुराने नियम के नैतिक संदेश से परेशानी है क्योंकि परमेश्वर ने इस्राएलियों को कनानियों को खत्म करने का आदेश दिया था।

लेकिन अगर हमारे पास इस मुद्दे पर आगे बात करने का समय होता, तो उस गंभीर आदेश का कारण यह था कि परमेश्वर यह सुनिश्चित करना चाहता था कि कनानी लोगों की मूर्तिपूजक, अनैतिक, अधर्मी, मूर्तिपूजक प्रथाएँ इस्राएल की जीवनशैली का हिस्सा न बनें। दुर्भाग्य से, हम ठीक यही होते हुए देखते हैं। वे लगातार इन देवताओं की ओर आकर्षित होते रहते हैं।

यह एक मुद्दा है और पाप भी। इस्राएल के देश में प्रवेश करने से पहले, वे जंगल में बाल की पूजा करते हैं और अनैतिकता करते हैं। इसलिए, यह सब उनके देश में आने से पहले ही हो जाता है।

फिर, जब वे देश में बाहर आते हैं, तो अपने आस-पास के लोगों के लिए एक विशिष्ट प्रकाश बनने और उन्हें सच्चे परमेश्वर की आराधना करने के लिए प्रेरित करने के बजाय, इस्राएल अंततः अन्य लोगों के देवताओं की पूजा करने लगता है। अब, हम इसे ईसाईयों के रूप में पढ़ सकते हैं, और हम इसे नए नियम के दृष्टिकोण से पढ़ते हैं और कहते हैं, इन लोगों के साथ क्या गलत था? उन्होंने

ऐसा करना क्यों नहीं बंद कर दिया? संभवतः उन्हें इन छवियों और मूर्तियों की पूजा करने के लिए क्या प्रेरित कर सकता है? वे सच्चे परमेश्वर को जानते हैं, और उन्होंने उनके द्वारा किए गए महान कार्यों को देखा है। उन्होंने पलायन को देखा है।

उन्होंने देखा है कि कैसे वह उन्हें जॉर्डन नदी से बाहर लाया। उन्होंने जेरिको की दीवारों को गिरते देखा है। उन्होंने देखा है कि उसने वादा किया हुआ देश उनके हाथों में दे दिया।

उन्होंने शक्तिशाली चमत्कार देखा है। क्यों? वे इसे क्यों नहीं रोकते? बाल पूजा का आकर्षण क्या था? हम यह भी सोचते हैं, ठीक है, पुराने नियम में लगातार पाप और मूर्तिपूजा की समस्या के बारे में बात की गई है। यह अच्छी बात है कि मुझे यह समस्या नहीं है क्योंकि मेरे घर में मूर्तियाँ और झूठे देवता नहीं हैं।

कभी-कभी अपने 50 इंच के टीवी के सामने झुकने के अलावा, मैं आम तौर पर छवियों और मूर्तियों की पूजा नहीं करता। मेरी कार के डैशबोर्ड पर कोई भी मूर्ति नहीं है। लेकिन हम यह समझने में विफल रहते हैं कि मूर्तिपूजा केवल छवियों और मूर्तियों के बारे में नहीं है।

यह सिर्फ़ उन देवताओं को स्वीकारोक्ति देने के बारे में नहीं है जिनके नाम हमारे द्वारा पूजे जाने वाले देवताओं से अलग हैं। मूर्तिपूजा दिल का मामला है। यह जेकेल अध्याय 14 में, जब भविष्यवक्ता यह जेकेल लोगों को उनकी मूर्तिपूजा के लिए चुनौती देता है, तो यह सिर्फ़ पत्थर या धातु से मूर्तियाँ बनाने का मामला नहीं है।

वह कहते हैं, तुमने अपने दिल में मूर्तियाँ खड़ी की हैं और बनाई हैं। हम पुराने नियम को देखकर यह नहीं कह सकते कि वाह, ये लोग मूर्तिपूजा से जूझ रहे हैं। यह एक निरंतर प्रलोभन था।

यह उनके लिए एक जाल था। उन्होंने ऐसा क्यों किया? हमें यह समस्या नहीं है। हम अपने दिल में जो कुछ भी स्थापित करते हैं, जो भगवान की जगह लेता है, जो हमारी परम भक्ति का विषय बन जाता है, जो हमारी सुरक्षा और महत्व का विषय बन जाता है, जो कुछ ऐसा बन जाता है जिसके लिए हम अपनी ऊर्जा और प्रयास देते हैं, जिसे केवल भगवान को ही दिया जाना चाहिए, वह मूर्तिपूजा का एक रूप है।

और इसलिए, यह हमारे लिए बहुत प्रासंगिक है। मुझे लगता है कि जैसे-जैसे हम बाल की पूजा और सभी कनानी पूजा प्रथाओं की पृष्ठभूमि को समझते हैं, हम समझ सकते हैं कि आखिरकार, वे इसकी ओर आकर्षित हुए, सिर्फ़ इसलिए नहीं कि उन्हें मूर्तियों और छवियों से प्यार था, बल्कि इसलिए कि बाल की पूजा में कुछ ऐसा था जिसने उनके दिलों को इस ओर आकर्षित किया। अब ऐसे कई देवता हैं जिन्हें बाल या बाल के नाम से जाना जाता है।

इस शब्द का सीधा सा मतलब है प्रभु या स्वामी। यह एक ऐसा शब्द है जिसका इस्तेमाल पति के लिए भी किया जा सकता है। यह अपने आप में कोई बुरा शब्द नहीं है, लेकिन बाल वह शब्द है जिसका इस्तेमाल कनानियों ने अपने प्रभु, अपने राजा और अपने स्वामी के रूप में बाल के प्रति अपनी भक्ति व्यक्त करने के लिए किया था।

और होशे की पुस्तक में बाल के रूप में वर्णित इन देवताओं की संख्या में से, हमें कभी-कभी बाल का बहुवचन संदर्भ मिलता है, जो सामान्य रूप से अवैध देवताओं के लिए एक शब्द हो सकता है, या यह इन स्थानीय स्थलों और अभयारण्यों में बाल की व्यक्तिगत अभिव्यक्तियों का संदर्भ हो सकता है जो अंततः एक ईश्वर, बाल का प्रतिनिधित्व करते हैं। लेकिन उगारिट में खोजे गए कनानी साहित्य और कनानी महाकाव्यों और मिथकों में, हमें इस देवता, बाल हदद से परिचित कराया गया है। ऐसी कई बातें हैं जो हम उसके बारे में जानते हैं।

मुझे लगता है कि जब हम समझते हैं कि यह देवता कौन था और इस पूजा में क्या शामिल था, तो हम समझते हैं कि इस्राएल के लोगों के दिल इस ओर क्यों आकर्षित हुए। जब हम देखते हैं कि उनके दिल बाल और कनानी देवताओं की पूजा की ओर आकर्षित हो रहे थे, तो हम समझते हैं कि उनके दिलों में जो इच्छाएँ और वासनाएँ थीं, जो उन्हें इस ओर आकर्षित कर रही थीं, वही इच्छाएँ अक्सर वही इच्छाएँ हैं जो आज हमें मूर्तिपूजा के विभिन्न रूपों की ओर आकर्षित कर रही हैं। लेकिन बाल हदद को तूफान देवता के रूप में जाना जाता था, और वह वास्तव में तूफान देवता के रूप में सबसे बढ़िया है।

उन्हें बादलों का सवार कहा जाता है। हमारे पास बाल का एक प्रसिद्ध चित्रण है जिसे संरक्षित किया गया है और पुरातत्व में पाया गया है जिसमें बाल को आकाश में सवारी करते हुए दिखाया गया है। उनके एक हाथ में बिजली का बोल्ट है, दूसरे हाथ में गदा है।

वह बादलों के ऊपर खड़ा है। तो विचार यह है कि जब बारिश होती है और जब तूफान या आंधी आती है, तो गड़गड़ाहट बाल की आवाज़ को दर्शाती है। बाल ही वह था जो बारिश और तूफान ला रहा था।

इसलिए, भूमि की उर्वरता वर्षा पर निर्भर थी, और बाल को इसका स्रोत माना जाता था। इसलिए, एक कृषि समाज और किसानों के राष्ट्र में जो अपनी कृषि उपज पर निर्भर थे क्योंकि यह उनकी ज़िंदगी और आजीविका को बनाए रखने वाली चीज़ थी, इसराइलियों के लिए इस देवता की पूजा करने का लगातार प्रलोभन था क्योंकि इसके पीछे समृद्धि का वादा था। अब, अगर मैं आज अपना खुद का धर्म बना रहा हूँ और मैं गैरीवाद के साथ आना चाहता हूँ, तो मुझे लगता है कि जिस तरीके से मैं लोगों को उस धर्म में आकर्षित कर सकता हूँ, उनमें से एक तरीका उन्हें समृद्धि का वादा करना होगा।

आज ईसाई धर्म के ऐसे रूप हैं जो वास्तव में समृद्धि का संदेश देते हैं जो मुझे लगता है कि बाइबल के सुसमाचार संदेश के साथ असंगत है, ईसाई संदेश के साथ असंगत है और ईसाई जीवन वास्तव में क्या है, लेकिन यह उसी चीज़ में निहित है। यहाँ एक ईश्वर है जो धन और समृद्धि प्रदान कर रहा है। इसलिए, इज़राइल, वास्तव में वे हमसे विदेशी नहीं हैं क्योंकि वे पत्थर और धातु की मूर्तियों की पूजा करते हैं।

वे हमारे जैसे ही हैं कि वे दुनिया की चीज़ों, शरीर की वासना, जीवन के अभिमान, आँखों की वासना और उन चीज़ों की ओर आकर्षित होते हैं जो धन और भौतिक आशीर्वाद उन्हें दिला सकते हैं। यही वास्तव में इसके पीछे की प्रेरणा है। और इसलिए, उनकी मूर्तिपूजा, एक तरह से,

आज के अमेरिकियों की मूर्तिपूजा से अलग नहीं है, जो उपभोक्तावाद और अपनी संपत्ति, अपनी नौकरी, अपने करियर, अपनी संपत्ति और अपनी समृद्धि की पूजा से प्रेरित हैं।

यहाँ तक कि कई ईसाइयों के लिए भी उन चीजों को खोना आस्था का एक बड़ा संकट होगा। इसलिए, इस्राएली उपासकों को हमसे अलग मानने के बजाय, क्योंकि वे इन मूर्तियों की ओर आकर्षित होते हैं, मुझे लगता है कि हमें समानताएँ और समानताएँ देखने की ज़रूरत है। कनानी महाकाव्यों में, बाल या बाल, और हम उसे संदर्भित करने के लिए इन दोनों शब्दों का उपयोग करेंगे, बाल यम और अराजकता की शक्तियों को वश में करके राजा बन जाता है।

यम समुद्र के देवता हैं। इसलिए, बाल अराजकता की शक्तियों के साथ युद्ध में शामिल होता है, जिसका प्रतिनिधित्व समुद्र के मंथन के पानी द्वारा किया जाता है। यम समुद्र के देवता हैं।

उसका सहयोगी नाहर है, जो नदी का देवता है। अराजकता की इन शक्तियों को कनानी साहित्य में लोटन नामक सात सिर वाले ड्रैगन द्वारा भी दर्शाया गया है। और इसलिए, बाल कनानी देवताओं में प्रमुख हो जाता है क्योंकि जब ये देवता, जो अराजकता की शक्तियाँ हैं, दूसरे देवताओं को धमकाते हैं, तो यह बाल ही होता है जो बाहर जाता है और उन्हें हरा देता है और उन्हें वश में कर लेता है और अराजकता के इन जल को रखता है जो सभ्यता को खतरे में डालते हैं, जो जीवन को खतरे में डालते हैं, जो जीवन की सुरक्षा को खतरे में डालते हैं, वह उन जल को उनके स्थान पर रखता है और उन्हें वश में कर लेता है।

इसलिए इसके परिणामस्वरूप, कनानी देवता और स्वयं कनानी लोग, बाल को एक महान राजा के रूप में पहचानते हैं। उसके लिए एक महल बनाया जाता है और अराजकता की इन शक्तियों को हराने के बाद उसे राजा के रूप में मान्यता दी जाती है। बाल कनानी साहित्य में भी है, हालाँकि, कहानी में किसी बिंदु पर बाल को अंततः मृत्यु के देवता मोट द्वारा पराजित किया जाता है।

और अंततः बाल, भले ही वह महान राजा है, वह तूफान का देवता है, वह अराजकता के पानी को हराता है और उसे वश में करता है। उसे खुद को अधोलोक में जाने के लिए मजबूर किया जाता है और वह ऐसा हर साल करता है। और कनानी महाकाव्य में, उसे अंततः उससे बचा लिया जाता है।

लेकिन जब कनानी लोग बाल को तूफान के देवता और बादलों के सवार के रूप में देखते थे, और फिर एक ऐसे देवता के रूप में जिसे बाल ने पराजित किया था और जिसे हर साल बचाया जाना था और पाताल लोक से बाहर आना था, तो उन्होंने इसे कृषि मौसमों को समझने के तरीके के रूप में इस्तेमाल किया। उस समय जब फसलें बोई जाती थीं और फिर पैदा होती थीं, तब भूमि में उर्वरता होती थी, जो उस उर्वरता का प्रतिनिधित्व करती थी जो बाल द्वारा लोगों के लिए प्रदान की जाने वाली बारिश में लाई जाती थी। हालाँकि, जब बाल पाताल लोक में चला गया, तो वह सर्दियों का समय था जब चीजें मर जाती थीं, जब चीजें बंजर होती थीं।

और फिर जब वह अधोलोक से बाहर आया, तो यह एक आवर्ती चक्र में दोहराया गया। तो यहाँ फिर से, यह इस्राएल के लोगों के लिए प्रलोभन है। वे इस ईश्वर की ओर आकर्षित होते हैं क्योंकि वह उन्हें कुछ ऐसा प्रदान करता है जिसकी मनुष्य स्वाभाविक रूप से पूजा करते हैं, समृद्धि और आशीर्वाद और जीविका और आजीविका।

वे किसान हैं और उन्हें इन फसलों की ज़रूरत है। और इसलिए, यही वह है जो बाल की पूजा के पीछे है, और विशेष रूप से, यही होशे 2, श्लोक 8 में कहा गया है। इस्राएल को नहीं पता था कि यह मैं ही था जिसने उसे अनाज, शराब और तेल दिया, जिसने उसके चांदी और सोने पर लुटाया, जिसका इस्तेमाल उन्होंने बाल के लिए किया। इसलिए, मैं अपने अनाज को उसके समय पर और अपने दाखमधु को उसके मौसम में वापस ले लूँगा, और मैं अपने ऊन और सन को, जो उसके नग्नता को ढँकने के लिए थे, छीन लूँगा, और मैं उसके प्रेमियों की नज़र में उसके व्यभिचार को उजागर करूँगा।

उन्होंने भगवान का आशीर्वाद लिया और उन आशीर्वादों को तूफान के देवता बाल को दे दिया। और मैं इसे वैलेंटाइन डे से तुलना करता हूँ। और मैं दुकान पर जाता हूँ और अपनी पत्नी के लिए गुलाब खरीदता हूँ।

और अपनी कृतज्ञता व्यक्त करने के तरीके के रूप में, मेरी पत्नी पड़ोसी के लिए रात का खाना बनाती है। मैं एक पति के रूप में उतना खुश नहीं होने वाला हूँ। बहुत अधिक गंभीर रूप से, इस्राएल ने परमेश्वर के विरुद्ध बेवफाई की है क्योंकि उन्होंने बाल के प्रति अपनी भक्ति दी है।

प्रभु ने उन्हें इन चीज़ों से आशीर्वाद दिया। प्रभु ने उन्हें वादा किया हुआ देश और दूध और शहद से बहने वाली यह जगह दी। उन्होंने इसे बुतपरस्त देवताओं का श्रेय दिया।

प्रभु कहते हैं कि मैं उन्हें सबक सिखाने जा रहा हूँ। मैं उन चीज़ों को दूर करने जा रहा हूँ, और वे सीखेंगे कि मैं ही अंतिम स्रोत हूँ। और ऐसा करके, प्रभु अंततः इस्राएल को उससे प्रेम करने के लिए प्रेरित करेगा, और वे अब उसे मेरा बाल नहीं कहेंगे।

वे उसे मेरे पति के रूप में संदर्भित करेंगे। बाल की पूजा का कोई भी विचार अंततः समाप्त हो जाएगा। यह सोचने का प्रलोभन कि बाल उनकी समृद्धि और उनकी उर्वरता का स्रोत था, अध्याय 7, श्लोक 14 में भी परिलक्षित होता है।

वे अपने हृदय से मुझे पुकारते नहीं। वे पश्चाताप नहीं करते और परमेश्वर की ओर नहीं लौटते। वे अनाज और दाखमधु के लिए अपने बिस्तर पर पड़े-पड़े विलाप करते हैं।

वे खुद को घायल करते हैं, और मेरे खिलाफ विद्रोह करते हैं। इसलिए जब वे सूखे और अकाल का सामना करते हैं और वाचा के अभिशापों का सामना करते हैं, जिसके बारे में परमेश्वर ने उन्हें चेतावनी दी है, तो पश्चाताप में परमेश्वर की ओर लौटने के बजाय, वे बस अपने बुतपरस्त अनुष्ठानों को बढ़ाते हैं, वे खुद को घायल करते हैं, और खुद को काटते हैं। वे वही काम करते हैं जो बाल के भविष्यद्वक्ताओं ने एलिय्याह के साथ माउंट कार्मेल पर प्रतियोगिता में किया था क्योंकि उनका मानना है कि वे देवता ही हैं जो उन्हें आशीर्वाद दिलाने में सक्षम हैं।

तो यही प्रेरणा है। होशे अध्याय 4, पद 12 में जो हमारे लिए वर्णित किया जा रहा है, उसके पीछे यही प्रेरणा है। वेश्यावृत्ति की आत्मा ने उन्हें भटका दिया है।

श्लोक 13. वे पहाड़ों की चोटियों पर बलिदान चढ़ाते हैं। वे पहाड़ियों पर बलि चढ़ाते हैं, और वे मूर्तिपूजक अनुष्ठान करते हैं जिनमें किसी न किसी प्रकार की यौन अनैतिकता शामिल होती है।

वे ये काम इसलिए करते हैं क्योंकि उनका मानना है कि ये देवता ही हैं जो उन्हें ये संसाधन मुहैया कराते हैं। अब, इस पाप ने अंततः केवल उत्तरी इस्राएल राज्य को ही प्रभावित नहीं किया। इसने दक्षिणी यहूदा राज्य को भी प्रभावित किया।

यह इस कारण का एक हिस्सा बन जाता है कि क्यों परमेश्वर को अंततः उनका न्याय करना चाहिए। यिर्मयाह की पुस्तक में एक अंश है जिसे मैं हमारे लिए पढ़ना चाहता हूँ जो मुझे लगता है कि हमारे लिए दर्शाता है कि इस्राएलियों और यहूदा के लोगों के मन में यह विचार कितना गहरा था। कि बाल और प्रजनन देवता, कनानी, हमारे आशीर्वाद के लिए जिम्मेदार हैं।

यहूदा के लोग जब अपने इतिहास पर नज़र डालते हैं और परमेश्वर द्वारा उन्हें निर्वासन में भेजे जाने की बात करते हैं, तो यिर्मयाह मिस्र में उनके एक समूह की सेवा कर रहा होता है और वे यिर्मयाह से यह कहते हैं: जो वचन तूने यहोवा के नाम पर हमसे कहा है, हम तेरी बात नहीं मानेंगे। लेकिन हम वह सब करेंगे जो हमने मन्त्रों मानी हैं। हम स्वर्ग की रानी को भेंट चढ़ाएँगे।

मुझे लगता है कि यहाँ संदर्भ कनानी प्रजनन देवी का है। हम उसके लिए अपने पेय-बलि चढ़ाएँगे, जैसा कि हमने और हमारे पूर्वजों ने, हमारे राजा और हमारे अधिकारियों ने, यहूदा के शहरों और यरूशलेम की सड़कों पर किया था। क्योंकि जब हमने ये काम किए, तो हमारे पास भरपूर भोजन था, हम समृद्ध थे, और हमें कोई विपत्ति नहीं दिखी।

लेकिन जब से हमने स्वर्ग की रानी को चढ़ावा चढ़ाना और उसे अर्घ्य देना छोड़ दिया है, तब से हमारे पास हर चीज़ की कमी है और हम तलवार और अकाल की चपेट में आ गए हैं। उनके पास वास्तविकता की पूरी तरह से उल्टी समझ थी। उन्होंने कहा, आप जानते हैं, यिर्मयाह, जिस कारण से हम निर्वासन में चले गए हैं, जिस कारण से हमारे साथ यह सब हुआ है, वह यह है कि योशियाह आया और उसने ये सुधार किए और हमें परमेश्वर की आराधना करने के लिए वापस लाया और हमारे अशेरा और हमारे झूठे देवताओं को हटा दिया और हमारी वेदियों को जला दिया।

अगर योशियाह ने हमें अकेला छोड़ दिया होता और अगर हम स्वर्ग की रानी को अपनी भेंट चढ़ाते रहते, अगर हम अपनी प्रजनन संबंधी रस्मों को जारी रखते, तो हमारे लिए सब कुछ ठीक हो जाता। इसलिए, आप हमें ईश्वर के प्रति विशेष रूप से वफादार होने के लिए कह रहे हैं; हम ऐसा नहीं करने जा रहे हैं क्योंकि ईश्वर के प्रति हमारी वफादारी ने ही हमें हमारी समृद्धि से वंचित किया है। मेरा मतलब है, यह वास्तविकता की उल्टी समझ है।

और फिर, हम इसे देखते हैं और हम उस संस्कृति का हिस्सा नहीं हैं, हम इस संदर्भ का हिस्सा नहीं हैं। और हम कहते हैं, वे ऐसा कैसे सोच सकते हैं? वे सच्चे ईश्वर को कैसे जान सकते हैं और फिर इन सस्ती नकल से दूर हो सकते हैं? उनके पास वास्तविकता कैसे हो सकती है और फिर वे किसी ऐसी चीज़ से दूर हो सकते हैं जो इतनी नकली और झूठी थी? इसका उत्तर यह है कि वे अपनी इच्छाओं से इस ओर आकर्षित हुए थे, वही इच्छाएँ जो हमारी हैं। और वे अपनी संस्कृति के प्रचलित झूठ से भी इस ओर आकर्षित हुए थे।

आप देखिए, उन्हें सत्य दिया गया था। परमेश्वर ने उन्हें यह वास्तविकता बताई थी कि वह एकमात्र सच्चा परमेश्वर है, लेकिन उनके आस-पास की प्रचलित संस्कृति में एक अलग विश्वास प्रणाली और लोकाचार था। परिणामस्वरूप, इस्राएलियों ने वास्तविकता की उस कहानी को स्वीकार कर लिया, न कि उस वास्तविकता की कहानी को जिसे परमेश्वर ने उन्हें बताया था।

रोमियों 12 में कहा गया है, इस संसार के सट्टन न बनो, परन्तु अपने मन के नए हो जाने से अपने आपको परिवर्तित करो। हमें अपने आस-पास की संस्कृति के प्रचलित झूठों पर विश्वास न करने के लिए काम करना चाहिए। हमें, अमेरिकियों के रूप में, इस प्रचलित झूठ पर विश्वास न करने के लिए काम करना चाहिए कि हमारा मूल्य हमारी संपत्ति से निर्धारित होता है या यह कि जो चीज़ हमें जीवन में खुश करती है वह हमारे पास मौजूद धन है या वे सुख हैं जिनका हम आनंद लेते हैं।

परमेश्वर ही हमारे आनंद, आनन्द, सुख और आशीर्वाद का स्रोत है। लेकिन जब हम संस्कृति के प्रचलित झूठ पर विश्वास करते हैं, तो हम भी उसी तरह मूर्तिपूजा में फंस जाते हैं जैसे इस्राएली थे। और इसलिए, यह संदेश हमारे लिए बहुत वास्तविक है।

आज हमारे जीवन में भी यही बात चल रही है। अब, पूरे पुराने नियम में, यह एक निरंतर लड़ाई है। यह एक निरंतर संघर्ष है।

वे बार-बार बाल और झूठे देवताओं की पूजा में फंसने जा रहे हैं। और इसलिए, पुराने नियम में जो कुछ होने जा रहा है, और हम इसे भविष्यवक्ताओं के साथ देखते हैं, हम इसे भजनकारों के साथ देखते हैं, हम इसे पुराने नियम के पूरे साहित्य में देखते हैं, वह यह है कि पुराने नियम का अधिकांश भाग बाल पूजा के विरुद्ध एक अंतर्निहित विवाद को प्रतिबिंबित करने जा रहा है। और मुझे लगता है कि जब हम इसे समझ सकते हैं, और हमें इस ऐतिहासिक सेटिंग में क्या चल रहा है, इसकी समझ मिलती है, तो हम पुराने नियम की गहरी और पूर्ण समझ प्राप्त करते हैं।

पुराने नियम के लेखक जो करने जा रहे हैं, वह यह है कि वे अक्सर कनानियों की कल्पना, विश्वास और विचारों को लेते हैं और उन्हें पूरी तरह से उलट देते हैं और कहते हैं कि बाल तूफान का देवता नहीं है। बाल वह नहीं है जो बारिश प्रदान करता है। यहोवा, एकमात्र सच्चा ईश्वर जो सब कुछ का निर्माता है और जो कभी होगा, वही राजा है।

वह वही है जो उर्वरता लाता है। वह वही है जिसने अराजकता की शक्तियों को वश में किया है। और इसलिए, हम देखेंगे कि कनानी पाठ में बाल पूजा से जुड़ी विशिष्ट छवियों, विचारों, रूपकों

और रूपांकनों का उपयोग, मुझे लगता है, पुराने नियम में एक विवादास्पद तरीके से किया जा रहा है।

यहाँ विचार यह नहीं है कि पुराने नियम ने अपने आस-पास की संस्कृति की मूर्तिपूजक पौराणिक कथाओं को अपनाया है, बल्कि यह उन सांस्कृतिक विचारों का उपयोग कर रहा है। यह उन छवियों का उपयोग कर रहा है। यह उन रूपांकनों का उपयोग कर रहा है जिन्हें लोग समझते थे कि वे उनकी प्रचलित संस्कृति का हिस्सा थे और उन्हें उन्हें यह सच्चाई सिखाने के तरीके के रूप में उपयोग कर रहे थे कि केवल ईश्वर ही वह है जो उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकता है।

इसलिए, कनानी साहित्य कहेगा कि बाल बादलों का सवार था। भजन 68, पद 4, और पुराने नियम के कुछ अन्य अंश कहेंगे, नहीं, प्रभु ही बादलों का सवार है। मेरे पसंदीदा भजनों में से एक भजन 29 है।

कुछ विद्वान यह भी अनुमान लगा सकते हैं कि यह मूल रूप से एक कनानी भजन रहा होगा जिसे बाल के बारे में गाया जाता था। इसे पुराने नियम में लिया गया, संशोधित किया गया और उसमें सुधार किया गया। यह एक ऐसा गीत बन गया जो प्रभु के बारे में है।

उस अंश में, प्रभु की आवाज़ सात बार आती है, ठीक वैसे ही जैसे कनान साहित्य में, महाकाव्य में सात बार प्रभु की आवाज़ का इस्तेमाल तूफ़ान के दौरान गड़गड़ाहट के बारे में बात करने के लिए किया गया है। लेकिन भजन 29 में जो किया गया है वह यह है कि यह भूमध्य सागर में शुरू होने वाले तूफ़ान को चित्रित करता है। यह भूमि के उत्तरी भाग से होते हुए इज़राइल से होते हुए जंगल में नीचे तक जाता है।

इसमें कहा गया है, जब हम इस तूफ़ान को देखते हैं, तो प्रभु की आवाज़ ही प्रतिबिम्बित होती है। इस स्तुति भजन में परमेश्वर की आराधना करते हुए इस्राएली यह कहना चाहते हैं कि यह बाल नहीं है जो तूफ़ान में अपनी शक्ति और पराक्रम और महानता को दर्शाता है; यह यहोवा है। इसलिए, प्रभु को वह महिमा दें जो उसके नाम के योग्य है।

यहोवा को महिमा और सम्मान दो क्योंकि जब यह तूफ़ान आसमान में घूमता है, तो यह बाल की महानता की नहीं, बल्कि यहोवा की महानता की याद दिलाता है क्योंकि यहोवा सृष्टिकर्ता है। कनानियों का मानना था कि उनके देवता ज़ाफ़ोन पर्वत पर रहते थे। वह पवित्र और पवित्र पर्वत था।

भजन 48 में कहा गया है कि सियोन पर्वत ज़ाफ़ोन की ऊँचाई है। मुझे लगता है कि कोई भी यरूशलेम जाकर स्वाभाविक रूप से इसे इस राजसी, शक्तिशाली पर्वत के रूप में वर्णित नहीं करेगा। लेकिन भजन 48 जो कर रहा है वह यह है कि यह सियोन को एक ब्रह्मांडीय पर्वत के रूप में चित्रित कर रहा है।

यह वह स्थान है जहाँ एकमात्र सच्चा परमेश्वर रहता है। भजन 46 में इसके परिणामस्वरूप, यह यहोवा ही है जो यरूशलेम शहर के विरुद्ध अराजकता के जल को नियंत्रित करता है जब यह उग्र

होता है, गर्जना करता है और झाग बनाता है। भजन 46 या यशायाह 17, 12 से 14 जैसे अंशों में पृथ्वी के राष्ट्रों की तुलना अराजकता के जल से की गई है।

फिर से, यह बाल नहीं है जिसने यम को वश में किया, बल्कि यह यहोवा है जिसने ऐसा किया है। यहोवा ने जब दुनिया बनाई और पानी को उसके स्थान पर रखा, तब उसने अराजकता के पानी को वश में किया, लेकिन उसने पूरे इतिहास में अराजकता की शक्तियों को भी वश में किया है। उसने निर्गमन के समय मिस्र की सेनाओं को हराने के लिए समुद्र का इस्तेमाल किया।

फिर से, भजन 46 में, जब सियोन के दुश्मन अराजकता के पानी की तरह दहाड़ते और झाग उड़ाते हैं, तो यहोवा ही वह है जो अंततः उन्हें वश में करने और उन्हें अधीन करने जा रहा है। फिर से, पुराना नियम इस पौराणिक विचार को नहीं मानता है कि नदी या इन पौराणिक प्राणियों का कोई ईश्वर है। पुराना नियम बस एक छवि और रूपांकन का उपयोग कर रहा है जो उस समय की संस्कृति को इस तरह से संप्रेषित करता है कि लोग यहोवा की विशिष्टता को एक सच्चे ईश्वर के रूप में समझ सकें।

भजन 74, मुझे लगता है, एक और अंश है जहाँ फिर से, हमारे पास बाल के बारे में कनानी लोगों के विचारों और विचारधारा और सोच के खिलाफ एक सीधा विवाद है। यह कहता है, हे परमेश्वर, मेरे राजा, तू प्राचीन काल से पृथ्वी के बीच में उद्धार का कार्य कर रहा है। तूने अपनी शक्ति से समुद्र को विभाजित किया है।

तुमने पानी पर समुद्री राक्षसों के सिर तोड़ दिए। तुमने लेविथान के सिर को कुचल दिया। मुझे कनानाइट साहित्य में लोटान याद है, समुद्र में सात सिर वाला ड्रैगन जो अराजकता के पानी का हिस्सा है।

यह बाल नहीं है जिसने लिब्यातान को हराया, बल्कि यह यहोवा है। तूने उसे जंगल के जानवरों के खाने के लिए दे दिया। तूने झरनों और नदियों को खोल दिया।

तूने हमेशा बहने वाली नदियों को सुखा दिया। इसलिए, यहाँ सृष्टि की एक छवि या चित्र का उपयोग किया जा रहा है: परमेश्वर ही है जिसने अराजकता की इन शक्तियों को वश में किया। भजन 104 कहता है कि प्रभु ने लिब्यातान को उसके साथ खेलने के लिए समुद्र में रखा।

और लेविथान, वह राक्षसी प्राणी नहीं है जिसे प्रभु को वश में करना चाहिए, बल्कि वह उन प्राणियों में से एक है जिसे परमेश्वर ने बनाया है और समुद्र में डाला है, और परमेश्वर उसके साथ खेलता है। एक विद्वान कहते हैं, मानो लेविथान उनका रबर डकी हो। तो, यह सब कनानियों के धर्मशास्त्र को उलट रहा है और कह रहा है कि यहोवा ही एकमात्र सच्चा परमेश्वर है।

एलिजा और एलीशा की कहानियाँ कनानियों के धर्मशास्त्र को उलटने के लिए बनाई गई हैं। अहाब और इज़ेबेल बाल की पूजा को बढ़ावा दे रहे हैं। वे इसे आधिकारिक राज्य धर्म बना रहे हैं।

खैर, यह उनके लिए कितना कारगर रहा? उनका मानना है कि बाल ही वह था जिसने बारिश की व्यवस्था की थी और वह बादलों का सवार था। और इसलिए, जब अहाब और इज़ेबेल ने इस्राएल

की वफ़ादारी उस विशेष परमेश्वर को दे दी, तो परमेश्वर क्या करता है? परमेश्वर तीन साल तक बारिश नहीं होने देता। उस समय के दौरान, परमेश्वर भविष्यवक्ता एलिय्याह को ले जाता है और उसे बाल के गृह क्षेत्र में रहने वाली सीरोफोनीशियन महिला की सेवा करने के लिए ले जाता है, और भोजन और तेल और भोजन की उसकी ज़रूरतें और जीवित रहने के लिए आवश्यक सभी चीज़ें प्रभु के इस भविष्यवक्ता द्वारा प्रदान की जाती हैं।

जबकि इस्राएल के लोग, जिन्हें ईश्वर की पूजा करनी चाहिए, लेकिन वे बाल की पूजा कर रहे हैं, भूख से मर रहे हैं। यहाँ एक सीधा विवाद है कि ईश्वर ही वह है जो उन चीज़ों को प्रदान करता है, और इस्राएल को तब तक उनसे वंचित रहना होगा जब तक कि उन्हें इसका एहसास न हो जाए। जब एलिय्याह सीरोफोनीशियन के बेटे, इस महिला, इस विधवा को जीवित करता है, तो यह एक अनुस्मारक है कि प्रभु ही वह है जिसके पास मृत्यु की शक्तियों पर शक्ति है।

यह उसे बाल से श्रेष्ठ बनाता है क्योंकि बाल खुद मोथ से हार जाता है और उसे पाताल लोक में जाना पड़ता है। परमेश्वर पूरी तरह से मृत्यु की शक्तियों पर नियंत्रण रखता है। यशायाह 25 में कहा गया है कि अंत में, जब परमेश्वर मृत्यु को समाप्त कर देगा, तो परमेश्वर मृत्यु को निगल जाएगा।

यह कनानी साहित्य में जो हम देखते हैं, उसके बिल्कुल विपरीत है, जहाँ मृत्यु का देवता मोथ महान निगलने वाला है और उसका एक होंठ तारों की ओर और दूसरा धरती की ओर फैला हुआ है और वह बीच में सब कुछ खा जाता है। यह कनानी लोगों का यह कहने का तरीका था कि मृत्यु जीत जाती है, हर कोई मर जाता है। मृत्यु के आँकड़े प्रभावशाली हैं, एक में से एक, लेकिन पुराना नियम एक आशा दे रहा है कि महान निगलने वाले को निगल लिया जाएगा।

बाल लोगों को यह नहीं दे सकता था। बाल को जीवन का देवता माना जाता था। आखिरकार, वह इस्राएल के लोगों के लिए मौत लेकर आया।

बाल की पूजा के साथ-साथ प्रजनन क्षमता की देवी की पूजा भी होती थी। अशेरा, अशतर और अनात भी थीं जो एल और बाल दोनों की पत्नियाँ थीं। इस्राएली अशेरा की पूजा में आकर्षित हुए।

अशेरा पोल्स इजरायली धर्म का हिस्सा बन गए। इजरायल और यहूदा दोनों देशों में पुरातत्वविदों ने इन महिला प्रजनन देवियों की कई नग्न मूर्तियों की खोज की है। इजरायली महिलाएं, यहूदा की महिलाएं, इनकी पूजा करती थीं, उनसे प्रार्थना करती थीं, उन्हें बलि चढ़ाती थीं क्योंकि उनका मानना था कि वे संतान प्रदान करेंगी।

वे ही प्रजनन क्षमता के स्रोत थे। प्रभु चाहते हैं कि वे समझें, और मैं इसका स्रोत हूँ। इसके लिए आपको मुझ पर भरोसा करने की ज़रूरत है।

प्रजनन और प्रावधान के इस पूरे विचार के साथ-साथ, ये अश्लील, अनैतिक प्रजनन अनुष्ठान भी थे जो इसके साथ जुड़े थे। पवित्र वेश्यावृत्ति इस्राएली पूजा का एक हिस्सा बन गई। जैसा कि हमने पिछले वीडियो में बात की थी, शायद सहानुभूति जादू का यह विचार नहीं था जहाँ वेश्या के साथ सेक्स अंततः भूमि में उर्वरता लाता है।

यह केवल इसलिए हो सकता है कि इन देवी-देवताओं की पूजा को इज़राइल में शुरू करने से अनैतिकता को बढ़ावा मिला और इसे धार्मिक स्वीकृति मिली। अब, वेश्यावृत्ति अभयारण्य में पैसे जुटाने का एक तरीका था। फिर से, अगर मैं अपना नया धर्म बनाने जा रहा था और अगर मैं एक ऐसे धर्म को बढ़ावा दे सकता था जो लोगों को अमीर और समृद्ध बनाने वाला था और सभी नैतिक प्रतिबंधों को हटा देता, तो मुझे लगता है कि मैं इंटरनेट पर जा सकता था और दिन के अंत तक कुछ अनुयायी बना सकता था।

यह फिर से बाल पूजा और इन कनानी प्रजनन देवी की पूजा का आकर्षण था, नैतिक मांगों जो परमेश्वर हम पर रखता है। हमें उसका पालन करने की ज़रूरत नहीं है। हम अपने शरीर के हुक्म और इच्छाओं के अनुसार जी सकते हैं और हमें खुद को बाध्य करने की ज़रूरत नहीं है।

हमें पवित्र राष्ट्र होने के बारे में चिंता करने की ज़रूरत नहीं है क्योंकि ये देवता हमें आशीर्वाद देंगे। और अनैतिकता और यौन विकृतियों को धार्मिक प्रथाओं के हिस्से के रूप में समर्थन दिया जाता है। फिर से, इस्राएली हमसे बहुत अलग नहीं हैं।

वे केवल धातु और पत्थर की छवियों की ओर आकर्षित नहीं होते। वे सुख, धन, इन सभी चीजों की ओर आकर्षित होते हैं और वे उन चीजों को चाहते हैं, न कि उस तरह से जिस तरह से भगवान उन्हें प्रदान करते हैं। भगवान अंततः हमारी इच्छाओं को सबसे गहरे तरीके से पूरा करेंगे।

वे उन्हें अवैध तरीके से चाहते हैं। हम जिन मूर्तियों की तलाश करते हैं या जिन चीजों को हम भगवान के स्थान पर रखते हैं, वे अंततः हमें उसी दिशा में ले जा रही हैं। इसलिए, बाल पूजा और कनानी प्रथाओं की प्रबल इच्छा और आकर्षण के कारण एक विवाद है।

पुराने नियम में एक विवाद है। आखिरकार, ये देवता आपको संतुष्ट नहीं करेंगे, और वे आपकी ज़रूरतों को पूरा नहीं करेंगे। जैसा कि मैंने होशे की पुस्तक का अध्ययन किया है, अब इसे हमारी भविष्यवाणी की पुस्तक में वापस ले जाता हूँ, होशे की पुस्तक में भी एक ऐसा ही विवाद है।

होशे लोगों से कई तरह से कहने जा रहा है, तुम बाल की ओर मुड़े हो क्योंकि तुम मानते हो कि वह तुम्हें संतुष्ट करेगा और तुम्हारी सभी ज़रूरतें पूरी करेगा। यह आवर्ती मूल भाव है, और मैं इसे होशे की पुस्तक में व्यर्थता का संदेश कहूँगा कि बाल और उनके झूठे देवता और उनकी झूठी प्रथाएँ और, वास्तव में, वे जो कुछ भी ईश्वर के अलावा किसी और की ओर मुड़ते हैं, वह अंततः काम नहीं करने वाला है। अपनी सुरक्षा के अंतिम स्रोत के रूप में ईश्वर के अलावा किसी और की ओर मुड़ना एक असफल रणनीति है।

यह आपको अंततः मृत्यु और दुख की ओर ले जाएगा और उस पूर्ण जीवन का अनुभव नहीं करवाएगा जो ईश्वर आपको प्रदान करेगा जब ईश्वर के अलावा कुछ भी आपके जीवन में भक्ति का अंतिम स्रोत बन जाता है। और इसलिए भविष्यवक्ता कहेंगे कि यदि आप बाल की पूजा करने लगते हैं, तो अंततः आप व्यर्थता का अनुभव करेंगे। भविष्यवक्ता यिर्मयाह यिर्मयाह के अध्याय 2

में यह कहते हैं, वे बाल की ओर मुड़े, वे बाल की ओर मुड़े, और ईश्वर ने उन्हें याल दिया; ईश्वर ने उन्हें उनके पुरस्कार के रूप में व्यर्थता दी।

यिर्मयाह अध्याय 2, श्लोक 13 कहता है कि मेरे लोगों ने बहुत ही मूर्खतापूर्ण काम किया है। उन्होंने उस परमेश्वर के साथ रिश्ता तोड़ दिया है जो जीवन के जल का स्रोत है और इसके बजाय वे टूटे हुए कुंडों की ओर मुड़ गए हैं जो कभी पानी नहीं रोकेंगे और जो कभी भी उनकी ज़रूरतों को पूरा नहीं करेंगे। और इसलिए बाल उन्हें संतुष्ट नहीं करने वाला है।

अध्याय 2, श्लोक 8 और 9, वे सोचते हैं कि यह बाल देवता हैं जिन्होंने उनके लिए यह प्रदान किया है। भगवान इसे छीनकर उन्हें सबक सिखाने जा रहे हैं। अध्याय 4 श्लोक 10 वे खाएंगे लेकिन वे संतुष्ट नहीं होंगे।

वे वेश्यावृत्ति तो करेंगी, लेकिन उनकी संख्या नहीं बढ़ेगी। उन्हें लगता है कि भगवान उन्हें ज़्यादा खाना देगा। ऐसा होने वाला नहीं है।

वे सोचते हैं कि उर्वरता देवी की पूजा उन्हें भेंट चढ़ाने, किशमिश के केक चढ़ाने से होती है जो इन उर्वरता अनुष्ठानों का हिस्सा थे, जिससे वे गुणा करने में सक्षम होंगे। ऐसा नहीं होने वाला है। अध्याय 9, श्लोक 1 और 2। हे इस्राएल, आनन्दित मत हो, अन्य लोगों की तरह मत बढ़ो, क्योंकि तुमने वेश्या का काम किया है और अपने परमेश्वर को त्याग दिया है।

तुमने सभी खलिहानों पर वेश्या की मजदूरी पसंद की है। और यहाँ बुतपरस्त प्रजनन संस्कार हैं। खलिहान और शराब की भट्टी उन्हें भोजन नहीं देगी, और नई शराब उन्हें निराश कर देगी।

वे यहोवा की भूमि में नहीं रहेंगे, बल्कि एप्रैम मिस्र लौट जाएँगे, और वे अश्शूर में अशुद्ध भोजन खाएँगे। क्या आपको लगता है कि देवता आपको फसल प्रदान करने जा रहे हैं? भूमि उपज नहीं देगी। जिस तरह से परमेश्वर ने एलिय्याह के दिनों में वर्षा को रोक दिया था, उसी तरह परमेश्वर होशे के दिनों में लोगों के साथ भी ऐसा ही करने जा रहा है।

और अंततः वे अश्शूर में अशुद्ध भोजन खाने जा रहे हैं। यह उनके द्वारा चुने गए चुनाव का परिणाम है। अध्याय 9, श्लोक 11 से 14।

गिनती 25 में इस्राएल के इतिहास पर वापस जाएँ। वे बालपोर के पास आए, और उन्होंने खुद को शर्मनाक चीज़ के लिए पवित्र किया, और वे उस चीज़ की तरह घृणित हो गए जिससे वे प्यार करते थे। एप्रैम की महिमा एक पक्षी की तरह उड़ जाएगी।

कोई जन्म नहीं, कोई गर्भावस्था नहीं, कोई गर्भाधान नहीं। तो, आप 8वीं सदी के इसराइल में एक इसराइली महिला की कल्पना करें। वे इन झूठे देवताओं से प्रार्थना कर रही हैं। वे इन देवियों से प्रार्थना कर रही हैं।

उनके घरों में उनकी प्रतिमाएँ हैं। वे उनके लिए किशमिश के केक और अन्य प्रसाद लाते हैं और उन्हें लगता है कि इससे उन्हें पोषण मिलेगा। और भगवान कहते हैं, कोई जन्म नहीं, कोई गर्भधारण नहीं, कोई गर्भाधान नहीं।

अगर वे बच्चे भी पालते हैं, तो मैं उन्हें तब तक दुखी रखूँगा जब तक उनके पास कोई बच्चा न हो। वाह, भगवान उनसे बच्चे छीन लेंगे। भगवान उनकी प्रजनन क्षमता छीन लेंगे।

9, 16, और 17. एक आखिरी आयत। एप्रेम पर संकट आया है, और उनकी जड़ सूख गई है।

वे बच्चे तो पैदा करेंगे, परन्तु वे फल नहीं देंगे। मैं उनके प्यारे बच्चों को मार डालूँगा। मेरा परमेश्वर उन्हें अस्वीकार कर देगा, क्योंकि उन्होंने उसकी बात नहीं मानी।

इसलिए वे सोचते हैं कि ये झूठे देवी-देवता उन्हें फसल और संतान प्रदान करेंगे। भगवान उन्हें दोनों से वंचित करने जा रहे हैं। यहाँ आश्चर्य की बात है।

खैर, यह वास्तव में कोई आश्चर्य की बात नहीं है। यह ऐसी बात है जो लोगों को हमेशा से पता होनी चाहिए थी। वे जिन आशीषों की तलाश कर रहे हैं, उनका असली स्रोत कौन है? आखिरकार ये चीज़ें कौन प्रदान करने वाला है? यह स्वयं प्रभु ही हैं।

मेरा मतलब है, उनके पास एक ईश्वर था जो उन्हें ये सब चीज़ें देगा। वे एक ऐसा ईश्वर चाहते थे जिसे वे अपनी आँखों से देख सकें। वे एक ऐसा ईश्वर चाहते थे जो बुतपरस्त संस्कृति और उनके आस-पास की प्रचलित संस्कृति से प्रभावित हो।

अगर उनमें देखने का विश्वास होता, तो वे समझ जाते कि प्रभु ही वह व्यक्ति है जिसने हमेशा से इन सभी को प्रदान करने का वादा किया था। इसलिए, होशे की पुस्तक में परमेश्वर के बारे में बात करने के लिए इस्तेमाल किए गए कुछ रूपक, मुझे लगता है, तूफान के देवता के रूप में बाल की उनकी पूजा के प्रत्यक्ष जवाब हैं। अध्याय 6, श्लोक 3 और 4। आइए हम प्रभु को जानने के लिए आगे बढ़ें।

उसका जाना भोर की तरह निश्चित है। वह हमारे पास वर्षा के रूप में और वसंत की बारिश के रूप में आएगा जो पृथ्वी को सींचती है। प्रभु, उसकी उपस्थिति, ताज़ा बारिश और ओस की तरह होगी।

वे गलत स्रोत की ओर मुड़ गए थे। वे एक खराब रणनीति के अनुसार जी रहे थे। और हमारे जीवन में पाप और मूर्तिपूजा अंततः मूर्खता का एक रूप है क्योंकि यह आपके जीवन को जीने की एक खराब रणनीति है।

अध्याय 10, श्लोक 12 में यह कहा गया है, अपने लिए धार्मिकता बोओ और दृढ़ प्रेम की फसल काटो। अपनी परती भूमि को जोतो, क्योंकि यह प्रभु को खोजने का समय है ताकि वह आकर तुम पर धार्मिकता की वर्षा करे। और परमेश्वर अंततः जो करने जा रहा है, परमेश्वर उन पर धार्मिकता की वर्षा करेगा।

और फिर जब वह ऐसा करता है, तो भौतिक वर्षा जो वे चाहते हैं, उसके परिणामस्वरूप आएगी। अंत में, जब हम पुस्तक के अंत की ओर मुड़ते हैं, तो हम इस तरह के कुछ कथन देखते हैं। अध्याय 14 पद 5 और 7 में, प्रभु कहते हैं, जब मैं उनके धर्मत्याग को ठीक कर दूँगा और जब मैं उनसे मुक्त रूप से प्रेम करूँगा, तो मैं इस्राएल के लिए ओस की तरह हो जाऊँगा।

वह कुमुदिनी की तरह खिलेगा। वह लेबनान के वृक्षों की तरह जड़ें जमाएगा। उसकी जड़ें दूर-दूर तक फैलेंगी।

उसकी खूबसूरती जैतून की तरह होगी, उसकी खुशबू लेबनान की तरह होगी। वे लौटकर मेरी छाया में रहेंगे। वे अनाज की तरह फलेंगे-फूलेंगे।

वे बेल की तरह खिलेंगे, और उनकी प्रसिद्धि लेबनान की शराब की तरह होगी। छोटे भविष्यवक्ताओं में इस्राएल लगातार कौन सी तीन चीजें खो रहा है? वे शराब, बेल और अनाज खो रहे हैं। जब वे सही स्रोत को पहचान लेंगे तो प्रभु उन्हें ये चीजें वापस दे देंगे।

प्रभु लोगों को वह प्रदान करने में सक्षम है जिसकी वे वास्तव में तलाश कर रहे हैं। हमारे दिलों में असली भूख आखिरकार उसके साथ एक रिश्ते की है। ऑगस्टीन ने कहा कि दिल तब तक बेचैन रहता है जब तक उसे आप में आराम नहीं मिल जाता।

इस्राएल इन सब बातों की ओर ऐसे फिरा है, जैसे प्यासा मनुष्य खारे पानी की ओर फिरता है। यह उनको तृप्त नहीं करेगा, और न उनको कुछ देगा।

परमेश्वर अंततः खुद का वर्णन इस तरह से करता है। वह कहता है, हे एप्रैम, मुझे मूर्तियों से क्या लेना-देना? मैं ही हूँ जो उत्तर देता हूँ और तुम्हारी देखभाल करता हूँ। मैं एक सदाबहार सरू की तरह हूँ।

तुम्हारा फल मुझसे ही आता है। और इसलिए पुस्तक में व्यर्थता का यह विवाद और बयानबाजी है, ताकि लोगों को याद दिलाया जा सके कि ईश्वर ही अंततः उनकी सुरक्षा का स्रोत बनने जा रहा है। मूर्तिपूजा के साथ एक समस्या है।

मूर्तिपूजा की अन्य अभिव्यक्तियों में से एक और जिस तरह से इस्राएल ने प्रभु के प्रति विश्वासघात किया था, वह यह है कि उन्होंने न केवल बाल और झूठे देवताओं की पूजा की, बल्कि बछड़े के देवताओं की पूजा करके और अपने पवित्र स्थानों के देवताओं की पूजा करके भी प्रभु के विरुद्ध धर्मत्याग और मूर्तिपूजा की। याद रखें, हारून ने निर्गमन अध्याय 32 में लोगों को इस प्रकार के धर्मत्याग में ले जाया था, सोने की मूर्ति बनाता है। ये वे देवता हैं जो आपको इस्राएल या मिस्र से बाहर लाए।

इस्राएल को किसी भी तरह की छवि के द्वारा परमेश्वर की आराधना नहीं करनी थी। किसी भी तरह की छवि अंततः परमेश्वर के चरित्र और स्वभाव को नीचा दिखाती। भले ही परमेश्वर को केवल इस अदृश्य बछड़े पर सवार के रूप में देखा जाता था और बछड़े का उपयोग परमेश्वर को

शक्ति और उर्वरता के देवता के रूप में चित्रित करने के लिए किया जाता था, लेकिन इससे परमेश्वर की वास्तविकता कम हो जाती थी।

उत्तरी राज्य में इस्राएल के इतिहास के दौरान, जब वे दान और बेतेल में पवित्र स्थानों पर सोने के बछड़ों की पूजा करते थे, जिन्हें यारोबाम प्रथम ने उनके लिए स्थापित किया था, तो वे धर्मत्याग में जी रहे थे। अध्याय 8 की आयत 5 और 6 में यह कहा गया है, हे सामरिया, मैंने तेरे बछड़े को ठुकरा दिया है। मेरा क्रोध उन पर भड़क रहा है।

वे कब तक निर्दोष बने रहेंगे? क्योंकि यह इस्राएल से एक कारीगर द्वारा बनाया गया है। यह परमेश्वर नहीं है। सामरिया का बछड़ा टुकड़े-टुकड़े कर दिया जाएगा।

इसलिए उन्हें बचाने के बजाय, उनके बछड़े के देवता को अंततः उसी तरह टुकड़े-टुकड़े कर दिया जाएगा जैसे हारून के देवता को तब तोड़ा गया था जब मूसा पहाड़ से नीचे आया था। ऐसे कई पवित्र स्थान हैं जहाँ वे पूजा करते थे और जहाँ उन्हें लगता था कि वे ईश्वर की इच्छा पूरी कर रहे हैं और वही कर रहे हैं जो ईश्वर ने उन्हें आदेश दिया था। ये पवित्र स्थान अंततः नष्ट होने जा रहे हैं।

और इसलिए होशे अध्याय 4 पद 15 में कहने जा रहा है, "हे इस्राएल, यद्यपि तू वेश्यावृत्ति करता है, परन्तु यहूदा को दोषी न बनने दे। गिलगाल में प्रवेश न करें, न ही बेथ-एवेन, बेथ-एल, परमेश्वर के घर, जिसे बेथ-एवेन, निकम्पेन का घर कहा जाता है, पर चढ़ें और यहोवा के जीवन की शपथ न लें। इसलिए वे भी भटक गए थे और वे इस अवैध तरीके से परमेश्वर की आराधना करते हुए यारोबाम के पापों को कायम रख रहे थे।

इसलिए मुझे लगता है कि अगर हम किसी तरह 8वीं सदी के इज़राइल में वापस जा सकें, तो हम वहाँ लोगों से बात करते हुए या शायद उनके धार्मिक व्यवहारों को देखते हुए देखेंगे कि वहाँ कुछ लोग वफ़ादार रहे और वे यहोवा के समर्पित उपासक थे। दूसरी तरफ़ कुछ ऐसे लोग भी थे जो बाल के समर्पित उपासक थे और वे कनानी देवताओं के प्रति समर्पित थे। लेकिन शायद इन सबके बीच और ज़्यादातर लोगों के बीच जो था वह यह था कि वहाँ एक समन्वयवादी मिश्रण था जहाँ यहोवा की पूजा और बाल की पूजा थी और इन सभी चीज़ों को एक साथ इस तरह से मिलाया गया था कि अंततः लोगों के लिए यह भ्रामक था और यह पूरी तरह से प्रभु के लिए अपमानजनक था।

और इसलिए समस्या सिर्फ़ मूर्ति पूजा की नहीं है। ऐसे कई तरीके हैं जिनसे समन्वयवाद में बाल पूजा और यहोवा की पूजा को एक साथ जोड़ दिया गया है। अगर आपने 8वीं सदी में रहने वाले ज़्यादातर इस्राएलियों का सर्वेक्षण किया होता, तो शायद वे यहोवा को एक महिला संगिनी, एक अशेरा के रूप में देखते, ठीक वैसे ही जैसे बाल के उपासक मानते थे।

अब मूर्ति पूजा के बारे में एक डरावनी बात जो पुराने नियम में हमें लगातार याद दिलाई जाती है, वह यह है कि जब आप इन मूर्तियों की पूजा करते हैं तो आप उन देवताओं की तरह बन जाते हैं जिनकी आप पूजा करते हैं। तो, आइए इस बारे में सोचें। ग्रेग बील ने मूर्ति पूजा के अपने बाइबिल धर्मशास्त्र में इसे विकसित किया है।

प्राचीन इस्राएल में, वे सोने के बछड़ों की पूजा कर रहे हैं। ध्यान दें कि अध्याय 4 पद 16 में इस्राएल का वर्णन कैसे किया गया है, एक जिद्दी बछिया की तरह, इस्राएल जिद्दी है। और क्या अब प्रभु उन्हें विस्तृत चरागाह में मेमने की तरह चरा सकता है? एप्रैम मूर्तियों से जुड़ा हुआ है।

उसे अकेला छोड़ दो। जब उनका शराब पीना बंद हो जाता है, तो वे खुद को वेश्यावृत्ति में झोंक देते हैं। इसलिए, पूरे पुराने नियम में यह विचार है कि आप जिसकी पूजा करते हैं, आप उसके जैसे बन जाते हैं।

और इसलिए, होशे की पुस्तक में इसका मतलब यह है कि इस्राएल जिद्दी बछड़े की तरह बन गया है। वे बछड़े के देवता की तरह बन गए हैं, जिसके सामने वे झुकते हैं और पूजा करते हैं। अध्याय 10 श्लोक 11 में यह कहा गया है, एप्रैम एक प्रशिक्षित बछड़ा था जिसे खलिहान में दाव लगाना पसंद था, लेकिन मैंने उसकी सुंदर गर्दन को छोड़ दिया।

लेकिन अब मैं एप्रैम को जूए में डालूँगा और यहूदा को हल चलाना होगा और याकूब को अपने लिए हल चलाना होगा। यदि तुम सोने के बछड़े की पूजा करना चाहते हो, यदि तुम एक जिद्दी बछिया बनना चाहते हो, तो प्रभु तुम पर जूआ डालेंगे और तुम्हें बंदी बनाकर ले जाएँगे। अध्याय 11 श्लोक 4 से 7, मैंने उन्हें दयालुता की रस्सियों और प्रेम के बंधनों से आगे बढ़ाया।

मैं उनके लिए ऐसा बन गया जो उनके जबड़ों पर से जूआ हल्का कर देता है, और मैं झुककर उन्हें खिलाता हूँ, और परमेश्वर उनकी देखभाल करता है। लेकिन मेरे लोग मुझसे दूर जाने पर तुले हुए हैं। अध्याय 10, श्लोक 7, तुम जिसकी पूजा करते हो, वैसे ही बन जाते हो।

तो आखिरकार, होशे की किताब हमें मूर्तिपूजा से जुड़े दो गंभीर मुद्दों की याद दिलाती है। उनमें से एक यह है कि परमेश्वर के अलावा कोई भी चीज़ हमें कभी संतुष्ट नहीं कर सकती। और आखिरकार, जब आप इन झूठे देवताओं की पूजा करते हैं, तो आप भी उन देवताओं के जैसे बन जाएँगे।

इस्राएल के लिए, उन्होंने बछड़े के देवता की पूजा की थी। इसके परिणामस्वरूप, वे एक जिद्दी बछिया बन गए। यशायाह कहने जा रहा है, तुम ऐसे देवताओं की पूजा करते हो जो गूंगे हैं और बोल नहीं सकते और सुन नहीं सकते और जिनके पास देखने के लिए आँखें या बोलने के लिए मुँह नहीं हैं।

आप भी उनकी तरह आध्यात्मिक रूप से असंवेदनशील हो गए हैं। और मुझे लगता है कि 8वीं शताब्दी में इजराइल में सामाजिक न्याय और हिंसा के लिए जो कारण बताए गए थे, उसका एक कारण यह भी है कि वे कनानी देवताओं के चरित्र की नकल कर रहे थे, जिनके वे भक्त बन गए थे। अहाब और इज़ेबेल के लिए बलपूर्वक, हिंसा द्वारा और हत्या द्वारा नाबोत की भूमि को छीनना कोई बड़ी बात नहीं है, क्योंकि यही उनके देवताओं का लोकाचार है।

उनके देवता हिंसा के ज़रिए सत्ता हासिल करते हैं और जो कुछ भी चाहते हैं उसे ले लेते हैं। जब आप उस ईश्वर का अनुसरण करते हैं जो आपको गुलामी से बाहर निकालता है, जो गुलामों की

देखभाल करता है, और जो विधवाओं और अनाथों से प्यार करता है, तो यह पूरी तरह से अलग लोकाचार होता है। यही है इस्राएल का ईश्वर।

वही सच्चा परमेश्वर है। और इसलिए, जब हम प्रभु का अनुसरण करते हैं, तो मूर्तिपूजा हमारे लिए अभी भी एक मुद्दा है, और होशे में हमें दो बड़ी चेतावनियाँ दी गई हैं। यदि आप परमेश्वर के अलावा किसी और चीज़ पर भरोसा करते हैं, यदि आप उस वस्तु को ऐसी चीज़ बनाते हैं जिस पर आप इस तरह भरोसा करते हैं कि आपको केवल परमेश्वर पर ही भरोसा करना चाहिए, तो यह आपको संतुष्ट नहीं करेगा।

यह आपको भरपूर जीवन की ओर नहीं ले जाएगा। मसीह में जीवन ही एकमात्र ऐसी चीज़ है जो ऐसा कर सकती है। इसके अलावा, आप जो भी पूजा करते हैं, आप अंततः वैसे ही बन जाते हैं।

मिडास की तरह, जब वह सोने की पूजा करता है और उसे बदल देता है, तो आप जो भी पूजा करते हैं, आप अंततः वैसे ही बन जाते हैं। होशे में हमें याद दिलाया गया है कि यह इतना महत्वपूर्ण क्यों है कि हमारी भक्ति और दिल प्रभु के लिए शुद्ध रहें और पूरी तरह से उन पर केंद्रित और समर्पित रहें। प्रभु कहते हैं कि तुम्हें मुझे अपने पूरे दिल से, अपने पूरे दिमाग से और अपनी पूरी ताकत से प्यार करना है।

हम महसूस करते हैं कि हम हर दिन ऐसा करने में विफल होते हैं, लेकिन यही वह लक्ष्य है जिसकी ओर परमेश्वर हमें अंततः ले जा रहा है। और यही वह रिश्ता है जो परमेश्वर हमारे साथ रखना चाहता है। एक अनन्य प्रेम संबंध जहाँ हम पूरी तरह से उसके प्रति समर्पित हों।

यह डॉ॰ गैरी येट्स की 12वीं पुस्तक पर व्याख्यान श्रृंखला है। यह व्याख्यान 14 है, इस्राएल की आध्यात्मिक बेवफाई, होशे 4-14, भाग 2।